विश्व न्याय मंदिर

बहाई विश्व केन्द्र

रिज़वान 1996

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय बन्धुओ,

इस रिज़वान उत्सव के आगमन के साथ ही अभी-अभी सम्पन्न हुई तीन वर्षीय योजना की अवधि में आशीर्वादित सौन्दर्य द्वारा प्रकटित अपार कृपाओं के लिए हमारा हृदय आभार से परिपूरित है। पवित्र वर्ष की गतिशील ऊर्जा ने रिज़वान 1993 में इस योजना को प्रारंभ किए जाते समय हमें अपार प्रेरणा दी थी और केन्द्रीभूत प्रयासों की यह पूरी अवधि इसी ऊर्जा से भरी रही। हमारा विश्व समुदाय पहले से भी कहीं ज्यादा सुगठित, लोचपूर्ण, प्रौढ़ और आत्मविश्वास - सम्पन्न बन गया। इसके साथ ही समुदाय की प्रतिष्ठा नई ऊंचाइयों पर पहुंच गई। यद्यपि कई देशों में नए बहाइयों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई लेकिन कुल मिलाकर इस योजना का अंत विस्मयकारी संख्यात्मक विस्तार के साथ नहीं हुआ। किन्तु गुणात्मक रूप से एक बहुत ही समृद्ध समुदाय उभरकर सामने आया -- एक ऐसा समुदाय जो प्रभुधर्म की प्रगति के लिए उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लिये तत्पर है ।

कार्मल पर्वत परियोजनाओं की भव्य प्रगति इस अवधि की एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही है । वास्तव में घोर बाधाओं के बावजूद यह कार्य उस चरण तक पूरा हो चुका है जिसकी पूर्वकल्पना तीन वर्षीय योजना की घोषणा करते हुए हमारे सन्देश में की गई थी। निर्माण के सभी चरण प्रारंभ हो चुके हैं। पवित्र पुस्तकों के अध्ययन के केन्द्र तथा अंतर्राष्ट्रीय अभिलेखागार भवन के अतिरिक्त परिसर की संरचना की रूप-रेखा बनाई जा चुकी है। इन भवनों का कार्य प्रगति पर है और अब बाहरी तथा भीतरी साज-सज्जा का काम शुरू हो गया है। आर्क की परिधि में अब जो तीसरी संरचना बनाई जा रही है वह है अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र का स्थायी भव और यह काम अब तेजी से जारी है। बाब की समाधि के नीचे ईश्वर के पवित्र पर्वत के पगतल से लेकर उसकी ढलानतक झलकती आभा को दर्शाते हुए नीचे के साथ सोपान अब पूरे हो चुके हैं और लोग इस पर्वतीय सौन्दर्य-वितान को देकर हैरत में पड़ जाते हैं।

अभी तक अद्भुत रूप से हुए इस विकास की बहिरंग वास्तविकता वस्तुतः एक और भी अधिक गहन उपलब्धि का प्रमाण है और वह उपलब्धि है हमारे उद्देश्य की एकता जिसने इस विशाल सामूहिक कार्य को पूरा करने में सम्पूर्ण पृथ्वी पर फेले हुए हमारे समुदाय के माध्यम से

अपना प्रभाव झलकाया है। इस एकता के कारण इतनी अधिक रूचि और सहयोग की भावना का संचार हुआ है जिसकी झलक मित्रों के अभूतपूर्व योगदान में दिखलाई पड़ती है। त्याग का वह स्तर देखने को मिला है जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी पर बहाउल्लाह के प्रेमियों की उच्च निष्ठा-शक्ति और हृदय की उदारता का परिचय मिलता है। कार्मेल पर्वत परियापेजना के लिए दिए गए दानों के माध्यम से चौदह करोड़ अस्सी लाख डॉलर का जो लक्ष्य तीन वर्षीय योजना में रखा गया था उसे प्राप्त कर लिया गया है और यह भी एक विशिष्ट उपलब्धि मानी जाएगी। इससे यह विश्वास होता है कि इन परियोजनाओं को इस शताब्दी के अंत तक पूरा किया जाने के लिए जो आर्थिक सहयोग आवश्यक है वह अनवरत रूप से प्राप्त होता रहेगा ।

पिछले तीन वर्षों में प्रगति के संकेत विविध और व्यापक क्षेत्रों में दृश्टिगोचर हुए हैं। बहाई समुदाय के विस्तार और सुगठन के उल्लेखनीय प्रयास, सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में पहले से ज्यादा कार्य तथा अभुतपूर्व रूप से बहाई समुदाय के बाहर के क्रियाकलापों के क्षेत्र में किए गए जोरदार प्रयास -- ये सब मिलकर नई क्षमताओं से सम्पन्न एक बहाई समुदाय का चित्र उपस्थित करते हैं ।

शिक्षण के क्षेत्र में क्रियाकलाप आम तौर पर बढ़े हैं जिसका संकेत इस बात से मिलता है कि योजना की अवधि में बारह नई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना हुई है और काफी संख्या में पायनीयर तथा भ्रमणषील शिक्षक उठ खड़े हुए हैं। योजना की अवधि में पायनियरों के लिए जो आह्वान किया गया था और जो नए उपाय सुझाए गए थे उससे अनेक देशों में अनुयायियों में एक स्फूर्ति-सी आ गई। विभिन्न देशों से और विभिन्न देशों में जाने वाले पायनियरों की संख्या काफी अच्छी रही और अपने तथा बाहरी देशों में भ्रमणशील शिक्षकों का बड़ा ही अच्छा प्रवाह देखने को मिला। शिक्षण के सामूहिक प्रयासों तथा केन्द्रीभूत दीर्घकालिक परियोजनाओं में सुनियोजित रूप से ध्यान दिया गया जिसका बहुत ही अच्छा परिणाम निकला और कई देशों में इसके प्रमाण पहले से कहीं ज्यादा दृश्टिगोचर हुए ।

आवश्यकता पर अविचल ध्यान दिया जिसकी झलक इस बात से मिलती है कि सलाहकारों के साथ किए गए विचार-विमर्श में शिक्षण प्रायोजनों के अंतर्गत नए अनुयायियों के दृढीकरण के कार्यक्रम तैयार करने, विभिन्न क्षमताओं के विकास के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने, कार्यशालाएं आयोजित करने, बच्चों की नैतिक शिक्षा के लिये शिक्षकों को प्रशिक्षित करने, बच्चों की कक्षा की संख्या बढाए जाने जैसे विषयों पर जोर दिया गया। इसने दुनिया के अनुक हिस्सों में शिक्षण संस्थानों की स्थापना के प्रयासों को प्रेरित किया। इन सभी बातों का बड़ा ही सुखद परिणाम सामने आया। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र की एक बड़ी उपलब्धि यह भी रही है कि इसने सलाहकारों के माध्यम से पहले की तुलना में कहीं ज्यादा देशों में ‘‘कोर साहित्य’’ की योजना बनाए जाने की

प्रक्रिया पर प्रभाव डाला। ऐसी योजनाओं के अंतर्गत धर्म के प्रसार और अनुयायियों के दृढ़ीकरण के लिए आवश्यक कुछ पुस्तकों का चुनाव किया गया और उन्हें ज्यादा संख्या में छपवाकर रियायती मूल्य पर उपलब्ध कराया गया। बहाई विश्व केन्द्र में स्थित इस अति महत्वपूर्ण संस्था के क्रमिक विकास की उल्लेखनीय प्रगति का स्पष्ट अनुभव विगत दिसम्बर महीने में सलाहकारों के सम्मेलन की तैयारी और समायोजन के समय हुआ। इस सम्मेलन ने आने वाले वर्षों में प्रभुधर्म के ऊँचे पद पर आसीन इन अधिकारियों के कार्य को एक दिशा प्रदान किया।

एक और प्रासंगिक विकास यह हुआ कि बड़ी संख्या में जनजातीय अनुयायियों ने अपने-अपने देशों में शिक्षण और सुगठन के कार्य की जिम्मेवारी स्वीकार की। अंगोला, कम्बोडिया, लाइबीरिया और सियेरा ल्योन जैसे अत्यंत संकटग्रस्त क्षेत्रों में बहाइयों ने महत्वपूर्ण विजय हासिल की, जिसके फलस्वरूप बड़ी संख्या में बहाई बनाए गए। चाहे वह शिक्षण का काम हो अथवा आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना करने और उन्हें फिर से सक्रिय बनाने की बात हो या फिर विकास परियोजनाएँ शुरू करने और चलाने का काम हो हर क्षेत्र में विजय मिली। ऐसी जगहों में जहां हाल ही में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना हुई है -- जैसे पहले के ईस्टर्न ब्लॉक के देशों में -- वहाँ मित्रों ने प्रभुधर्म के क्रियाकलापों के संचालन में बड़ी ही प्रशंसनीय क्षमता दिखलाई है। इस अवधि की मुख्य विशेषता थी पूरे विश्व में द्वीपों में निवास करने वाले बहाई समुदायों में नई शक्ति, साहस और रचनात्मकता का संचार होना। कई तरह से व्यापक क्रियाकलाप चलाए गए जिनमें स्थानीय शिक्षकों को तैयार करने, पड़ोस के द्वीपों में दर्जनों भ्रमणशील शिक्षकों को प्रशिक्षत करके भेजने, अनेक अवसरों पर प्रभुधर्म का संदेश देने और ऐसे अनेक कार्यक्रम आयोजित करने जैसे काम शामिल थे जिनमें उच्च पदाधिकारी और प्रभावशाली लोग उपस्थित हुए। हाल के वर्षों में द्वीप देशों के कई सरकारी नेताओं ने बहाई विश्व केन्द्र की यात्रा की, यह सच्चाई संकेत देती है कि सात समन्दर पार बिखरे हुए इन छोट-छोट देशों में रहने वाले अनुयायियों के कार्य कितने शक्तिप्रवण थे। एक साथ विचार करने पर, अनेक स्थानों में बहाई मित्रों के प्रयासों के उपरोक्त सभी उदाहरण शिक्षण के प्रति गहरी ब्रतिबद्धता, पहले से अधिक प्रौढ़ता तथा लोच झलकाते हैं। इससे पता चलता है कि विभिन्न आबादी वाले इलाकों में रहने वाले बहाइयों को गतिशील बनाने वाली उनके निष्ठा-शक्ति कितनी गहन है।

इन कार्यों के साथ ही, विस्तार और सुगठन के कार्य में युवाओं का योगदान बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा। तीन वर्ष के दौरान उनके क्रियाकलापों ने नई दिशाएं प्राप्त कीं। युवा सम्मेलनों और अपनी रूचि के अनुरूप अन्य प्रकार के सम्मेलनों के आध्यम से गतिशील होकर इन युवाओं ने अपने-अपने देशों में तथा देशों के बाहर भी भ्रमणशील शिक्षकों के रूप में तथा सामूहिक शिक्षण परियोजनाओं में पूरी टीम के साथ भाग लेकर शिक्षण के कार्य में बहुत समय, ऊर्जा और उत्साह लगाया और इस तरह उन्होंने सैकड़ों लोगों को प्रभुधर्म को स्वीकार करने की प्रेरणा दी और अनेक

स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना में सहायक बने। संगीत और कला को धर्म के सन्देश के प्रसार और शिक्षण का माध्यम बनाकर उन्होंने कई जगह विशेष अभियान चलाए। नृत्य और नाटक पर आधारित कार्यशालाओं के विस्तार का बड़ा ही खास प्रभाव पड़ा। प्रभुधर्म के दायरे से बाहर की घटनाओं में भी युवाओं के भाग लेने से इस क्षेत्र में धर्म की नई संभावनाएं जगीं। धर्म की सेवा के लिए एक वर्ष का समय देने की प्रतिबद्धता की बड़ी व्यापक झलक देखने को मिली। साथ ही साथ बड़ी संख्या में ऐसे युवक भी सामने आए जिन्होंने शैक्षणिक, आजीविकापरक और व्यावसायिक औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किए। इससे कुल मिलाकर यह संकेत मिला है कि बहाई युवा न केवल प्रभुधर्म की प्रत्यक्ष सेवा करने में बल्कि, साथ ही साथ, समाज के सामान्य विकास में भी अब कहीं ज्यादा योगदान दे रहे हैं।

सामाजिक-आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में, मित्रों की ज्यादा से ज्यादा प्रतिभागिता से समुदाय के सुगठन के संकेत मिले। उदाहरण के लिए, एक सरकार ने बहाइयों को सात पब्लिक स्कूलों का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने को कहा और बहाइयों ने विश्व-केन्द्र के सामाजिक-आर्थिक विकास विभाग के सहयोग से यह जिम्मेवारी स्वीकार की। उल्लेखनीय है कि अफ्रीका में अपने देश की राजनीतिक अस्थिरता के कारण प्रतिबन्धित होते हुए भी वहां के बहाई समुदायों ने कृषि तथा अन्य परियोजनाओं का विकास जारी रखा और इसके फलस्वरूप वे आर्थिक आत्म-निर्भरता की दिशा में अग्रसर हो सके। कई देशों में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के प्रयासों में तेजी आई। वहां दूसरे संगठनों द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं में बहाई लोग प्रतिभागी बने और स्वयं भी महिलाओं के हितों पर ध्यान देने के उद्देश्य से समितियों और विशेष विभागों का गठन किया। बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का महिला विकास प्रभाग इस उत्था का एक प्रतीक बनकर सामने आया ।

अनेक देशों में सरकार द्वारा प्रायोजित स्वास्थ्य-विकास कार्यक्रमों में बहाइयों ने बड़ा ही उल्लेखनीय योगदान दिया। कई अवसरों पर बहाई ग्रुपों ने स्वयं ही ऐसे कार्यक्रम शुरू किए और चलाए। सामाजिक-आर्थिक विकास के कार्य में भी कई प्रमुख परियोजनाओं और संगठनों को दृढ़ आधार पर स्थापित और सुगठित करके विशेषता प्राप्त की गई। एक विशेष साक्षरता अभियान के पहले कदम के रूप में तीन अग्र साक्षरता परियोजनाएं चलाई गईं जिसका सामाजिक-आर्थिक विकास विभाग पूरे विश्व में विस्तार करना चाहता है। विकास परियोजनाओं में बहाइयों द्वारा शुरू किए गए काम और उनमें बहाइयों की भागीदारी से प्रभुधर्म का संदेश देने का काम भी संभव हुआ क्योंकि इन परियोजनाओं में भागीदार बनने के लिए आम लोग भी आकर इसमें जुट गए; साथ ही जन-संचार माध्यम के लोग इस ओर आकर्शित हुए।

बहाई समुदाय से बाहर के घटनाक्रमों में दो ऐसे कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन दोनों ही कार्यक्रमों में अमातुल-बहा रूहिया खानुम प्रमुख भागीदार थीं। पिछली बसन्त-ऋतु में उन्होंने ''धर्म और संरक्षण की संन्धि'' नामक विषय पर आयोजित शीर्ष सम्मेलन में चार-सदस्सीय बहाई प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। यह सम्मेलन ''विन्डसर कास्सल'' में महामहिम प्रिंस फिलिप के संरक्षण में सम्पन्न हुआ था । पुनः अक्टूबर के महीने में रूहिया खानुम ने ''ध्रुवीय समाज की ओर'' नामक विशय पर आयोजित चौथी अंतराष्ट्रीय संवादगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में भाग लिया। यह कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मामलों के संगठन ''यूनेस्को'' के तत्वावधान में ''विश्व शान्ति के लिए बहाई चेयर'' और मेरीलैंड विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित किया गया था ।

इस पुनरीक्षण की अवधि में कुछ और भी खास संकेत उजागर हुए जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी अवधि में ''किताब-ए-अक़दस'' का मूल अरबी संस्करण प्रकाशित किया गया जिसमें पहली बार फारसी में टिप्पणियां शामिल की गईं और इस प्रकार अंग्रेजी संस्करण की तरह ही अरबी पाठ में भी पूरक अंश शामिल कर दिए गए। पूरी दुनिया के अनुयायियों के दिलों में हुकूकुल्लाह का विधान और भी गहराई से बैठ गया तथा तीन वर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष में हुकूकुल्लाह के न्यासधारी धर्मभुजा अली मुहम्मद वर्गा ने पवित्र भूमि में अपना निवास बनाया। इस महत्वपूर्ण कदम का यह भी अभिप्राय है कि तीनों ही धर्मभुजा -- अमातुल-बहा रूहिया खानुम, अली अकबर फुरूतन और डॉ. वर्गा अब विश्व केन्द्र में ही निवास करते हैं। तीर्थयात्रियों और विश्व केन्द्र में कार्य करने वाले मित्रों के लिए वे प्रेरणा के स्रोत हैं ।

ऐसे हृदयग्राही विकासक्रमों की पृष्ठभूमि में हम इस रिजवान में चार वर्षीय योजना में प्रवेश कर रहे हैं जो हमें रिजवान 2000 की ओर ले जाएगी। प्रत्येक भू-भाग में निवास करने वाले अपने भाइयों और बहनों का हम आह्वान करते हैं कि वे गतिशील प्रयासों के इस दौर में हमारे सहभागी बनें ताकि आने वाली 21वीं षताब्दी की सन्तानों के लिए हम प्रचुर और चिरस्थायी विरासत छोड़ सकें ।

चार वर्षीय योजना का प्रमुख लक्ष्य है: समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में उल्लेखनीय प्रगति जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, यह साफ दिखाई देने वाली प्रगति व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बहाई के क्रियाकलापों और संस्थाओं तथा स्थानीय समुदाय के विकास के माध्यम से प्राप्त की जानी है ।

''समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में प्रगति'' - इस वाक्यांश में यह धारणा जुड़ी है कि वर्तमान परिस्थितियों की मांग है और ऐसे अवसर सामने हैं कि व्यापक स्तर पर बहाई समुदाय का लगातार विकास किया जाए इसका यह अर्थ है कि विश्व की परिस्थितियों

के परिप्रेक्ष्य में ऐसा जोरदार विकास परमावश्यक है। इसका अभिप्राय यह है कि बहाउल्लाह की विश्व-व्यवस्था की रचना करने वाले तीनों ही प्रतिभागी - व्यक्ति, संस्था और समुदाय -- ऐसे विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इसके लिए सर्वप्रथम आध्यात्मिक और मानसिक रूप से उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि ऐसा संभव है। इसके बाद बड़ी संख्या में लोगों को बहाई धर्म की परिधि में लाकर उनके आध्यात्मिक तथा प्रशासनिक प्रशिक्षण तथा विकास की गति निर्धारित करके ज्ञानवान तथा सक्रिय शिक्षकों और प्रशंसकों की संख्या बढ़ानी होगी। प्रभुधर्म के कार्य में ऐसे शिक्षकों के शामिल होने से और भी नए अनुयायियों का प्रवाह बनेगा, आध्यात्मिक सभाओं का अबाध रूप से विकास ही होगा और बहाई समुदाय के बराबर चलने वाले सुगठन के कार्य शुरू हो जाएंगे।

बहाई समुदाय से बाहर के क्रियाकलापों में जो जोरदार प्रयास किए गए उनसे भी प्रभुधर्म का संदेश देने के कार्य को बहुत बल मिला। ऐसे कार्यों ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। दुनिया के सभी हिस्सों में ऐसे विलक्षण प्रयासों से प्रभुधर्म को दुनिया की दृष्टि में और भी ज्यादा उजागर कर दिया तथा बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बढ़ाई गई। छोटे-बड़े सभी प्रकार के बहाई समुदायों ने बड़ी ही सहजता से सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए या उनमें शामिल हुए। सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों तथा कई अग्रणी लोगों ने समाज की एक शक्ति के रूप में बहाइयों को पहचाना, समाचार जगत तक सहज ही इसकी पहुंच बन गया । इस तरह प्रगति की एक व्यापक रूपरेखा परिलक्षित हुई। वास्तव में समाचारपत्रों और इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों ने बहाई घटनाओं पर इतना व्यापक प्रकाश डाला जिसकी गिनती नहीं है ।

पूरी दुनिया के तीव्र घटनाक्रमों में कुछ विशेष विकास-तत्व प्रकट हुए। सरकारी उच्चाधिकारियों ने कई अवसरों पर कार्यक्रमों और प्रायोजनों में बहाइयों को शामिल होने या सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया, सरकारी क्रियाकलापों पर बड़ी सफलता के साथ बहाइयों ने प्रभाव डाला, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बहाई अकादमिक कार्यक्रम स्थापित किए गए, पब्लिक स्कूलों के लिए पाठ्यसामग्री तैयार की गई तथा बहाई संस्थाओं, बहाई ग्रुपों और व्यक्तिगत बहाइयों ने प्रभुधर्म का संदेश देने के कार्य में कलाविद्या का सदुपयोग किया ।

1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ के दो प्रमुख कार्यक्रमों ने विश्वव्यापी अभियानों में विचार की एकता के उभरकर सामने आने और उसकी गति तेज होने का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन दोनों ही कार्यक्रमों में बहाई समदुाय सक्रिय रहा और उसमें प्रतिभागी बना। पहला कार्यक्रम था, मार्च में कॉपेनहेगेन में आयोजित सामाजिक विकास सम्बन्धी विश्व शिखर सम्मेलन जिसमें 40 से भी अधिक देशों से 250 बहाई मित्रों ने भाग लिया और जिन्होंने शिखर सम्मेलन के प्रतिभागियों तथा तत्सम्बन्धी गैर-सरकारी संगठनों के फोरम में भाग लेने वाले लोगों को प्रभुधर्म की शिक्षाओं से

सुपरिचित कराने के लिए जोरदार प्रयास किए। यही वह अवसर था जब बाहई अंतराष्ट्रीय समुदाय के जन-सम्पर्क विभाग द्‌वारा तैयार किए गए वक्तव्य "मानवजाति की समृद्‌धि" का पहली बार वितरण और उस पर विचार-विमर्श किया गया। इसके बाद के पूरक कार्यों के अंतर्गत पूरी दुनिया में कॉन्फ्रेंसों और सेमिनारों का आयोजन किया गया और साथ ही यह वक्तव्य भी वितरित किया गया। ऐसा ही दूसरा कार्यक्रम था, चौथा विश्व महिला सम्मेलन और सितम्बर में ही इसके समकक्ष बीजिंग में आयोजित गैर-सरकारी संगठनों का फोरम जिसमें दुनिया भर से 500 से भी अधिक बहाइयों ने भाग लिया। इसके अलावा विभागीय शिष्टामंडल के रूप में बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय भी इसमें प्रतिभागी बना। इसी साल एक तीसरी घटना हुई और वह थी संयुक्त राष्ट्र संघ की 50वीं वर्षगॉठ का आयोजन जिससे प्रेरित होकर बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने "सभी राष्ट्रों का निर्णायक बिन्दु" नामक वक्तव्य तैयार किया और उसका वितरण किया। इस वक्तव्य में इस विश्व संगठन के विकास सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं ।

इसके अलावा, प्रक्रिया में प्रगति लाने का एक अभिप्राय यह भी है कि इस प्रक्रिया में पहले से ही प्रगति हो रही है और स्थानीय तथा राष्ट्रीय समुदाय इस प्रगति के अलग-अलग चरणा में हैं। अब सभी समुदायों को यह जिम्मेवारी दी जाती है कि वे विस्तार और सुगठन के उस स्तर तक पहुंचने का अनवरत प्रयास करें जहां तक पहुंचना उनके लिए संभव है। हालांकि व्यक्ति और संस्था दोनों ही अलग-अलग दायरों में काम करेंगे किन्तु दोनों का ही आह्वान किया जाता है कि हमारे समुदाय और मानवजाति की नियति के इस निर्णायक समय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए व उठ खड़े हों।

प्रभुधर्म के कार्य में व्यक्ति की भूमिका का महत्व अनोखा है। व्यक्ति ही तो है जो धर्म की उस निष्ठा-शक्ति का परिचय देता है जिसपर प्रभुधर्म के शिक्षण का कार्य और समुदाय का विकास निर्भर करता है। बहाउल्लाह ने अपने हर अनुयायी को धर्म का सन्देश देने की आज्ञा दी है और यह एक ऐसा उत्तरदायित्व है जिससे न तो बचकर भागा जा सकता है और न ही जिसका बोझ प्रभुधर्म की किसी संस्था के उपर डाला जा सकता है। ऐसी क्षमताओं का उपयोग तो व्यक्ति ही कर सकता है जिनमें सेवा-कार्य में पहल करने की योग्यता शामिल है, अवसरों को ग्रहण करने, मित्रता स्थापित करने, एक-दूसरे से बात-व्यवहार करने, समाज तथा धर्म की सेवा के लिए दूसरों का सहयोग प्राप्त करने तथा परामर्शकारी संस्थाओं द्‌वारा लिए गए निर्णयों को कार्य रूप में परिणत करने की योग्यता निहित है। यह व्यक्ति का ही कर्तव्य है कि वह "ऐसे सभी क्षेत्रों पर विचार करे जो उसकी पहुँच के दायरे में हैं और जिनका उपयोग वह ऐसे व्यक्तिगत प्रयासों के लिए कर सकता है जिससे प्रभुधर्म के प्रति दूसरों का ध्यान खींचा जा सके, उनकी अभिरूचि जगाई जा सके, तथा जिन्हें वे इस धर्म की परिधि में लाना चाहते हैं उनकी आस्था को दृढ़ बनाया जा सके।"

इन क्षमताओं से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने के लिए व्यक्ति बहाउल्लाह के प्रति अपने प्रेम का आश्रय लेता है। वह संविदा की शक्ति, प्रार्थना के गत्यात्मक प्रभाव, पवित्र लेखों के नियमित पाठ और अध्ययन से प्राप्त प्रेरणा और शिक्षा से शक्ति प्राप्त करता है । वह उस रूपान्तरकारी शक्ति के बल प्राप्त करता है जो उसकी आत्मा पर प्रभाव डालती है -- तब जब वह ईश्वरीय विधानों और सिद्धान्तों के अनुरूप आचरण करने का प्रयास करता है। इन सभी बातों के अलावा व्यक्ति को, जिसे प्रभुधर्म का संदेश देने का दायित्व सौंपा गया है, बहाउल्लाह द्वारा प्रतिज्ञापित विशेष आशीर्वादों को आकर्षित करने की क्षमता प्राप्त होती है। आशीर्वादित सौन्दर्य ने कहा है: "जो कोई भी इस युग में अपने अधरों को खोलेगा और अपने प्रभु के नाम का उल्लेख करेगा, उसपर मुझ सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के नाम के स्वर्ग से असंख्य दिव्य प्रेरणाएं अवतरित होंगी। उच्च स्वर्ग के सहचर उसके पास उतरकर आएंगे जिनमें से प्रत्येक के पास होगा विशुद्ध ज्योति का उदात्त प्याला।"

शोगी एफेंदी ने व्यक्तिगत पहल और सक्रियता का परम आवश्यकता पर जोर दिया हैं उन्होंने कहा है कि व्यक्ति द्वारा "पूरे हृदय से सतत और उदार रूप से" दिए गए सहयोग के बिना राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की हर योजना का "असफल होना निश्चित" है। इसके बिना अब्दुल-बहा की "दिव्य योजना" का उद्देश्य भी "बाधित" है। साथ ही, स्वयं बहाउल्लाह की जीवनदायिनी शक्ति "उस प्रत्येक व्यक्ति से छीन ली जाएगी जो आखिरकार अपना कर्तव्य निभाने में चूक जाएगा।" अतः जो भी प्रगति प्राप्त की जानी है उसमें व्यक्ति की भूमिका अत्यंत निर्णयक है, क्योंकि व्यक्ति के ही पास योजनाओं के क्रियान्वयन की शक्ति है -- ऐसी शक्ति जिसे अपनी पहलकदमी और सतत सक्रियता के माध्यम से सिर्फ व्यक्ति ही प्रकट कर सकता है। कई बार व्यक्तियों द्वारा की गई पहल अपूर्णता की भावना के कारण बाधित हो जाती है। इस सम्बन्ध में धर्मसंरक्षक की ओर से लिखे गए एक पत्र में यह परामर्श दिया गया हैः "जिन बातों का आपने उल्लेख किया है, उनमें सबसे प्रमुख है अनुयायियों में साहस और पहल करने की भावना का अभाव तथा हीन-भावना जिसके कारण वे लोगों को संदेश नहीं सुना सकते। धर्मसंरक्षक चाहते हैं कि बहाई बन्धु इन दुर्बल भावनाओं पर विजय प्राप्त करें क्योंकि ये भावनाएं न केवल उनके प्रयासों को पंगु बना देती हैं बल्कि उनके हृदयों में धधकती हुई धर्म की अग्नि को बुझाने का काम भी करती है। जब तक सभी यह महसूस नहीं करने लगेंगे कि उमनें से प्रत्येक के पास दूसरों को धर्म का संदेश दे सकने की अपनी-अपनी तरह की क्षमताएं हैं तब तक वह उस लक्ष्य को पाने की आशा नहीं कर सकते जो प्रिय तथा मास्टर ने उनके सामने रखे हैं। .... हर कोई एक क्षमतावान शिक्षक है । बस, उसे ईश्वर ने जो भी दिया है उसे प्रयोग में लाने की जरूरत है ताकि वह सिद्ध कर सके कि वह प्रभुधर्म के विश्वास की कसौटी पर खरा उतरा है ।"

जहाँ तक संस्थाओं का सवाल है, समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया उनपर उसी अनुपात में प्रभाव डालेगी जिस अनुपात में वे उस प्रक्रिया पर प्रभाव डालेंगे। वर्तमान समय में स्थानीय तथा राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभाओं के विकास की पुकार यह है कि उनके सदस्य और उन्हें चुनने वाले लोग दोनों ही नए वैचारिक स्तर को प्राप्त करें क्योंकि बहाई समुदाय एक गहन ऐतिहासिक प्रक्रिया के दौर से गुज़र रहा है जो प्रक्रिया अब एक नए निर्णायक चरण में प्रवेश कर रही है। बहाउल्लाह ने इस दुनिया को वे संस्थाएं दी हैं जो एक ऐसी अवस्था के अनुसार कार्य करेंगे जिसके माध्यम से नवीन विश्व-सभ्यता की शक्तियों को नियंत्रित प्रणाली में बांध जा सकेगा। इस भव्य विकास की ओर आने के लिए यह जरूरी है कि बहाई समुदाय का व्यापक और सतत विस्तार हो ताकि इन संस्थाओं को प्रौढ़ बनने का प्र्याप्त दायरा मिल सके। के सभी भू-भागों में रहने वाले बहाउल्लाह के निष्ठावान अनुयायियों के लिए यह तुरन्त ध्यान दिए जाने का मुद्दा है।

ऐसे व्यापक विस्तार की प्रक्रिया तेज करने और उनका समावेश करने के लिए आध्यात्मिक सभाओं को दिव्य मार्गदर्शन के माध्यम, शिक्षण कार्यों के आयोजक, मानव संसाधनों के विकासकर्ता, समुदायों के निर्माता और असंख्य लोगों के स्नेहिल अभिभावक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिए विकास की एक नई आस्था को प्राप्त करना होगा। इन सभाओं के सदस्य प्रभुधर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप साथ मिलकर परामर्श कर सकें और अपने क्षेत्र के बहाई मित्रों के साथ भी विचार-विमर्श परामर्श कर सकें और अपने क्षेत्र के बहाई मित्रों के साथ ही विचार-विमर्श कर सकें -- उनमें ऐसी योग्यता का विकास करके, उनमें सेवा की भावना को ऊंचा उठाकर, आत्मप्रेरणा के साथ महाद्वीपीय सलाहकारों और उनके सहायकों के साथ मिलकर कार्य करके और बाहरी लोगों से सम्बन्धों का विकास करके वे इन व्यापक दायरों को साकार कर सकते हैं। संस्थाओं के विकास-क्रम की प्रगति खास तौर पर इस रूप में भी झलकनी चाहिए कि ऐसे क्षेत्रों की संख्या काफी बढ़ जाए जहां वहां की आध्यात्मिक सभाएं ऐसी सक्रियता से कार्य करती हों कि व्यक्तिगत रूप् से हर अनुयायी की सेवा करने की क्षमता का विकास हो और एकता पर आधारित क्रियाशीलता में संवृद्धि हो। संक्षेप में, आध्यात्मिक सभाओं की प्रौढ़ता का मापदंड केवल यही नहीं होना चाहिए कि वह नियमित बैठकें कर लेती है और उसका काम-काज बड़ा प्रभावी ढंग से चल रहा है, बल्कि यह भी मापदंड होना चाहिए कि बहाइयों की संख्या कितनी बढ़ी, आध्यात्मिक सभा और समुदाय के सदस्यों के बीच कितना प्रभावी अन्तर्सम्बन्ध है, समुदाय का सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन कितना ऊंचा है और सतत विकासमान प्रगति की गतिशील प्रक्रिया में वह समुदाय कितनी जीवन्तता झलका रहा है।

बहाई समुदाय व्यक्ति और संस्था से थोड़ा अलग और विशिष्ट है। जैसे-जैसे उसका आकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उसका अपना विशिष्ट लक्षण और उसकी विशेष पहचान बनने लगती है यह विकास परमावश्यक है और जरूरत है इस पर ध्यान दिए जाने की। यह ध्यान दोनों ही

दृष्टियों से दिया जाना चाहिए: ऐसे स्थानों की दृष्टि से जहां व्यापक पैमाने पर लोग बहाई बने हैं और ऐसी जगहों की दृष्टि से भी जहां समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की सम्भावना दिखती हो। समुदाय का मतलब सिर्फ बहुत सारे सदस्यों का जमघट नहीं है बल्कि यह सभ्यता की एक विस्तृत ईकाई है जिसके अंतर्गत व्यक्ति हैं, परिवार हैं, संस्थाएं हैं और जो अपने दायरे और दायरे से बाहर भी लोगों के कल्याण के सामान्य उद्देश्य को लेकर मिलजुल कर काम करने वाली प्रणालियों, एजेन्सियों और संगठनों को जन्म देती हैं। इसके अंतर्गत विविध किन्तु परस्पर सम्बद्ध प्रतिभागी हुआ करते हैं जो आध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की अथक खोज करते हुए एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। चूंकि हर जगह के बहाई अभी समुदाय के निर्माण की प्रक्रिया के शुरूआती दौर में ही हैं अतः वर्तमान उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए बहुत ही प्रबल प्रयास करना पड़ेगा।

जैसाकि हमने पहले के एक संदेश में कहा है, सतुदाय के फलने-फूलने की क्रिया -- खास तौर पर स्थानीय स्तर पर -- के लिए यह आवश्यक है कि आचार-व्यवहार के मौजूदा ढांचों में और भी ज्यादा सुधार लाकर उन्हें ऐसा बना दिया जाए जिनमें व्यक्तिगत सदस्यों के गुणों और आध्यात्मिक सभा की सक्रियता की सामूहिक अभिव्यक्ति समुदाय की एकता और बन्धुता के माध्यम से झलक उठे, उसके क्रियाकलापों और विकास की गतिमयता से झांक उठे। ऐसा तभी होगा जब समुदाय के सभी घटक तत्व --प्रौढ़, युवा और बच्चे --एक समग्र ईकाई बन जाएं। आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक - इन सारे क्रियाकलापों में, शिक्षण और विकास की स्थानीय योजनाओं में, उनका एकीकरण प्रतिबिम्बित हो। इसके लिए चाहिए सामूहिक इच्छा-शक्ति और उद्देश्य के प्रति समर्पित भावना जिससे प्रेरित होकर हर साल आध्यात्मिक सभा चुनी जाए और निरन्तर चुनी जाती रहे। इसमें निहित है ईश्वर की आराधना करने का मंतव्य। अतः समुदाय के आध्यात्मिक जीवन के लिए यह परम आवश्यक है कि बहाई बन्धु स्थानीय बहाई केन्द्रों में और बहाई केन्द्र न हो तो कहीं और भी या किसी मित्र के घर पर नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक मिलने के अवसरों का आयाजन करते रहें।

समूहों द्वारा प्रभु-धर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में विस्तार और सुगठन की जो संभावनाएं निहित उनपर प्रभाव डालने के लिए मानव संसाधन के विकास हेतु दृढनिश्चय के साथ विश्वव्यापी प्रयास करना होगा। किसी भी तेजी से विस्तृत होते समुदाय की शिक्षा और उसके प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण होते हुए भी सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि व्यक्तिगत रूप से कुछ बहाई अपने-अपने घरों पर अध्ययन कक्षाए चलाने का प्रयास करें, बहाई संस्थाएं कभी-कभार एकाध प्रशिक्षण वर्ग चला लें या समुदाय के ऐसे ही अन्य प्रकार के अनौपचारिक कार्यक्रम आयोजित कर लिए जाएं। अतः प्राथमिक महत्व की बात यह है कि बड़ी संख्या में अनुयायियों को प्रभुधर्म की आधारभूत बातों की शिक्षा देने और उन्हें प्रशिक्षण के द्वारा सहायता देने के लिए नई प्रणालियों के विकास पर सुनियोजित रूप से ध्यान देना हेगा ताकि ये मित्रगण अपनी ईश्वर-प्रदत्त क्षमता का

उपयोग करके प्रभुधर्म की सेवा कर सकें। स्थायी संस्थाओं की स्थापना में अब और देर नहीं होनी चाहिए। इन संस्थानों के माध्यम से नियमित रूप से, सुसंगठित और औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि संस्थान को कार्य-संचालन सम्बन्धी कुछ सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए किन्तु इसके लिए अपना भवन हो ही, यह कोई जरूरी नहीं।

इस विषय पर महाद्वीपीय सलाहकारों और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के बीच और भी सघन सहयोग की आवश्यकता है क्योंकि बहुत हद तक इन शिक्षण संस्थानों की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उनके संचालन में महाद्वीपीय सलाहकार और सहायक मंडल सदस्य कितने सक्रिय रूप से शामिल हैं। खास तौर पर सहायक मंडल सदस्यों के लिए यह जरूरी होगा कि संस्थानों और उनके कार्यक्रमों से लाभान्वित होने वाली स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ उनका कार्य-सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ हो। चूंकि ये संस्थान ज्ञान के केन्द्र कलाएंगे और उनका चरित्र सहायक मंडल सदस्यों के शैक्षणिक उत्तरदायित्व से मेल खाता है तथा उन्हें इन उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए ये संस्थान एक व्यापक दायरा देते हैं, अतः यह उचित प्रतीत होता है कि संस्थान के संचालन में अंतरंग भागीदारी निभाना प्रभुधर्म के इन अधिकारियों के विकासमान कार्यों का हिस्सा बना दिया जाए। संस्थान के कार्यक्रमों के विकास और संचालन की क्रिया में अधिकाधिक संख्या में अनुयायियों की प्रतिभाओं और योग्यताओं का उपयोग करना भी आवश्यक है।

चूंकि बहाई समुदाय में "संस्थान" शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है अतः थोड़ा स्पष्टीकरण आवश्यक है। आने वाले चार वर्ष हमारे धर्म के इतिहास में एक विशिष्ट कालखंड का परिचायक हैं। युगान्तरकारी है यह कालखंड! पूरी दुनिया के बहाई मित्रों को जो कर्तव्य सुझाया जा रहा है वह यह है कि वे अपने आप को, अपने भौतिक संसाधन को, अपनी योग्यताएँ, अपना समय, शिक्षण संस्थान का ऐसा नेटवर्क विकसित करने में लगा दें जैसा पहले नहीं था। बहाई ज्ञान के ये केन्द्र एक अत्यंत ही व्यावहारिक लक्ष्य को लेकर चलेंगे और वह लक्ष्य होगा: बड़ी संख्या में ऐसे प्रशिक्षित अनुयायियों को तैयार करना जो बड़े प्रेम और बड़ी कुशलता के साथ समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया का विकास कर सकें, उसका मार्ग प्रशस्त कर सकें।

बहाउल्लाह ने अपने सेवकों को निर्देश दिया है: "अपनी ऊर्जाओं को प्रभुधर्म के प्रसार के कार्य में केन्द्रित कर दो"। उन्होंने पुनः कहा है: "जो कोई इस महान कार्य के योग्य है वह उठे और धर्म का विकास करे। जो कोई भी ऐसान कर सके, उसका कर्तव्य है कि इस प्रकटीकरण का संदेश सुनाने के लिए अपने स्थान पर किसी और को प्रतिनियुक्त करें ...।" जैसे कोई अपने बदले में शिक्षण के कार्य हेतु दूसरे को नियुक्त करता है और किसी पायनीयर अथवा भ्रमणशील शिक्षक के खर्च उठता है, उसी तरह संस्थान की सेवा के लिए भी कोई चाहे तो किसी शिक्षक को प्रतिनियुक्त कर सकता है। ऐसा शिक्षक वस्तुतः शिक्षकों का शिक्षक है। ऐसा करने के लिए कोई

भी व्यक्ति महाद्वीपीय बहाई कोष में योगदान दे सकता है या इस खास उद्देश्य के लिए विशेषीकृत अंशदान स्थानीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय कोषों में भेज सकता है।

चार वर्षीय योजना के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए गए समस्त प्रयासों में मित्रों से यह भी आग्रह किया जाता है कि कला के सदुपयोग की ओर वे और भी अधिक ध्यान दें जिससे न केवल प्रभुधर्म का संदेश देने बल्कि विस्तार और सुगठन के कार्य में भी सहायता मिल सके। प्रभुधर्म के प्रभाव के विस्तार की दिशा में चित्रात्मक विवरण और अभिनय, संगीत अथवा गायन और साहित्यिक रचनाओं ने महती भूमिका निभाई है और आगे भी निभा सकती है। लोक कला के स्तर पर, इस संभावना के मद्देनजर पूरी दुनिया में प्रयास किए जा सकते हैं -- क्या गाँव, क्या शहर, क्या महानगर, सभी जगह । बहाई शिक्षाओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के साधन के रूप में शोगी एफेन्दी कला के प्रति बहुत ही आशावान थे। उनकी ओर से किसी व्यक्ति को लिखे गए एक पत्र में प्रिय धर्मसंरक्षक के विचार इस प्रकार से हैं: कालावधि के मध्य कु. बर्नी कई दीर्घकालीन अक्का-प्रवास कर सकीं। कभी-कभी वह एक बार में कई सप्ताहों या महीनों के लिए ठहरीं और इस बीच अनेक अवसरों पर उनको अब्दुल बहा के साथ मिल-बैठने और विविध विषयों पर प्रश्न करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनेक वार्तालाप लंच टेबल पर सम्पन्न हुए। अब्दुल बहा के एक दामाद या उनके तीन तत्कालीन सचिवों में से एक के लिए व्यवस्था की गई थी कि वह उनके उत्तरों को मूल रूप में फारसी में लिख लिया करें। इस प्रकार तैयार विवरणों के संकलन से एक संचयन बनाया गया। तत्पश्चात अब्दुल बहा ने इन विवरणों में दो बार अपने हाथ से सुधार किए, कभी तो उनका भरपूर संशोधन करके और साथ ही शब्द-योजना का सावधानी के साथ पुनरीक्षण करके भी।

चयन तथा पुनरीक्षण प्रक्रिया पूर्ण हो जाने के बाद 'सम आन्सर्ड क्वेश्चंस' के तीन भिन्न-भिन्न संस्करण प्रथम संस्करण 1908 में बड़े प्रकाशन केन्द्रों से प्रकाशित हुए - हॉलैण्ड में ई. जे. ब्रिल द्वारा मौलिक 'फारसी मूल पाठ, लंदन में केगम पॉल, ट्रेन्च, ट्रब्नर एण्ड कम्पनी द्वारा कु. बर्नी का अंग्रेजी अनुवाद, और हिपोलिट ड्रेफस (जिनसे कु. बर्नी ने बाद में विवाह कर लिया) कृत एक फ्रांसीसी अनुवाद जो पेरिस में अर्नेस्ट लिरोक्य द्वारा प्रकाशित किया गया।

विषय सूची के संक्षिप्त अध्ययन से सम्मिलित विषय वस्तु के विस्तार की झलक पाई जा सकती है। भाग 1 में कुछ विश्व धर्मों के संस्थापकों द्वारा सम्पूर्ण मानव इतिहास पर पड़े प्रभाव से सम्बन्धित परिचयात्मक वार्ताओं के साथ ही बाइबिल की कुछ भविष्यवाणियों पर प्रकाश डालते हुए कई अध्याय दिए गये हैं। भाग 2 ईसाई धर्ममत के प्रमुख तत्वों-बपतिस्मा, त्रियेक, परमेश्वर, परम प्रसाद और ईसा के पुनरूत्थान की नवीन व्याख्यायें प्रस्तुत करता है। भाग 3 ईश्वरावतारों की शक्तियों एवं स्थितियों - विश्व में उनका विलक्षण स्थान, उनके ज्ञान तथा प्रभाव का स्रोत

और इतिहास के मंच पर उनके प्रादुर्भाव की चक्रीय प्रकृति से सम्बन्धित है। भाग 4 मनुष्य के मूलोद्गम, शक्तियों और दशाओं के अतिरिक्त धरती पर मानव विकासक्रम के निहितार्थों, आत्मा की अमरता, मनः प्रकृति, और आत्मा तथा देह के बीच सम्बन्ध की जानकारी देता है। भाग 5 में मिश्रित प्रकरणों के साथ, श्रम सम्बन्धों तथा अपराधियों की सजा जैसे व्यावहारिक विषयों से लेकर अस्तित्व की एकता के सूफी मत और पुनर्जन्म जैसे दुरूह विषयों के साथ पुस्तक का समापन होता है।

'सम आन्सर्ड क्वेश्चंस' में उन प्रकरणों का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होते हुए भी, पुस्तक का अभिप्राय यह नहीं था कि वह अपने आपमें पूर्ण विचार प्रणाली का सर्वांगपूर्ण प्रतिपादन करे, जैसा कि ग्रन्थ के शीर्षक से स्पष्ट होता है। इसीलिए प्रभुधर्म की कई मूलभूत शिक्षाओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, उन महीनों और वर्षों के अन्तराल में जब ये वार्ताएं दी गईं एक ही प्रकरण को कभी-कभी पृथक वार्तालापों में भिन्न परिप्रेक्ष्य से सम्बोधित किया गया था। इसके फलस्वरूप किसी विषय को पूर्णतया समझने के लिए अपेक्षित अवधारणाएँ विभिन्न अध्यायों में फैली हो सकती हैं, अथवा किसी परवर्ती अध्याय की विषय-वस्तु किसी पूर्व अध्याय की समझ का आधार बन सकती है। अंत में, यह भी ध्यान देने योग्य है कि अब्दुल बहा ने यद्यपि मूल पाठ का पुनरीक्षण एवं संशोधन किया था, किन्तु उन्हांने उत्तरों के आधारभूत स्वरूप को बदलने या सामग्री को पुनर्गठित और सुगठित बनाने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया। अतः किसी दिए गये विषय पर अब्दुल बहा के प्रतिपादन का पूरा चित्र विकसित करने के लिए, सावधान पाठक को किसी अध्याय को सम्पूर्ण पुस्तक के प्रसंगाधीन और पुस्तक को बहाई शिक्षाओं की सम्पूर्ण सामग्री के वृहत्तर संदर्भ के अन्तर्गत मानना चाहिए।

एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रजातियों के विकासक्रम विषय के निरूपण का है। भाग 4 में स्पष्ट रूप से इसका विवेचन हुआ है वह दिन आएगा जब प्रभुधर्म की चेतना, इसकी शिक्षाओं की प्रस्तुति मंच पर, कला या साहित्य के माध्यम से की जाएगी और तब यह धर्म जंगल में आग की तरह चारों और फेल जाएगा। खास तौर पर जनसमूहों के बीच कला नीरस तर्कज्ञान की तुलना में कहीं ज्यादा बेहतर ढंग से उच्च भावनाओं को जगाने का काम कर सकती है।''

एक ओर जब सभी जगहों के बहाई मित्रगण और संस्थाएँ योजना के अनिवार्य तत्वों को क्रियाशील करने के लिए अपनी शक्ति केन्द्रित करेंगे तो दूसरी ओर कार्मेल पर्वत की विशाल परियोजनाएँ अनुमानतः इस शताब्दी के अंत तक अपनी परिसमाप्ति की ओर अग्रसर होती रहेंगी। रिज़वान 2000 ई. में योजना की परिसमाप्ति तथा पवित्र लेखों का अध्ययन केन्द्र तथा अभिलेखागार भवन का अतिरिक्त परिसर दोनों ही बनकर तैयार हो चुके रेंगे तथा अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र का भवन समापन के अन्तिम चरण में पहुंच चुका होगा। सार्वजनिक मार्ग का वह हिस्सा जो अभी

बाब की समाधिक के ऊपर के सौपानों के रास्ते में अवरोध बना हुआ है, उसे नीचे झुका दिया जाएगा और एक पुल, जिस पर एक उद्यान भी बनाया जाएगा, बनकर तैयार हो जाएगा। ऊपर के पाँच सोपान भी बन चुके रहेंगे। बचे हुए चार ऊपरी सोपानों और वर्तत के नीचे के भाग के दो सोपानों पर भी काफी काम हो चुका रहेगा। साथ ही, विश्व केन्द्र में और भी विशेष प्रयासों पर ध्यान दिया जाएगा। ‘‘किताब-ए-अकदस’’ के और भी नए विधानों को पूरे विश्व में लागू करने, बहाउल्लाह के चुने हुए लेखों का अंग्रेजी में एक नया खंड तैयार करने, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के कार्यों को और भी ज्यादा विकसित करने तथा विश्व केन्द्र में आगन्तुकों तथा तीर्थ यात्रियों की संख्या बढ़ाने के पायों पर विचार करने जैसे विषयों पर ध्यान दिया जाएगा ।

बहाई विश्व समुदाय सामाजिक-आर्थिक विकास तथा बहाई समुदाय से बाहर के क्रियाकलापों में और भी अधिक विस्तृत प्रयास करेगा और इस तरह वह विश्व में सुव्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्नशील होने वाली शक्तियों के साथ प्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने का कार्य जारी रखेगा। पूरी दुनिया में सैकड़ों विकास-कार्यों के माध्यम से अब तक जो प्रगति प्राप्त की गई है उनके आधार पर, संसाधन और अवसर की उपलब्धता के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक विकास विभाग अपनी समायोजन क्षमता का विकास करते हुए और भी अधिक विकास सुनिश्चित करने के उद्देश्य के सहयोग प्रदान करेगा। बहाई समुदाय से बाहर के क्रियाकलापों के क्षेत्र में, विश्व शांति की ओर ले जाने वाली प्रक्रियाओं पर प्रभाव डालने के उद्देश्य के कार्य किए जाएंगे। इसके लिए मानवाधिकार के विकास, महिलाओं की स्थिति में सुधार, विश्व की समृद्धि तथा नैतिक विकास जैसे मुद्दों पर बहाई विश्व समुदाय अपनी भागीदारी निभाएगा। इन विषयों पर बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का संयुक्त राष्ट्र संघ कार्यालय ऐसे उपायों की खोज करेगा जिनसे बहाइयों और संयुक्त राष्ट्र के बीच सहयोग और भी मजबूत हो। इसी तरह जन-सम्पर्क विभाग बहाई संस्थानों के साथ सहयोग करेगा, ताकि इन विषयों का उपयोग करके प्रभुधर्म का संदेश और भी बड़े पैमाने पर दिया जा सके। सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों के साथ हमारे कार्य-व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पहलू होगा ईरान में बहाइयों के अधिकार की सुरक्षा और ईरान तथा अन्य देशों में जहाँ बहाई धर्म प्रतिबन्धित है, उसे मुक्त कराने के लिए प्रयास तेज करना। ऐसे सभी प्रसंगों में बहाई मित्रों और संस्थाओं से आग्रह है कि वे ऐसे क्रियाकलापों के महत्व के प्रति जागरूक रहें और नए सिरे से उन पर ध्यान दें।

चार वर्षीय योजना का इस रिज़वान में दो नई राष्ट्रीय सभाओं की स्थापना से शुरू होना एक शुभ लक्षण है। हमें यह घोषित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि इनके प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशनों में हमारे प्रतिनिधि होंगे: माल्दोवा में धर्मभुजा अमातुल-बहा रूहिय्या खानुम और त्साओ तोंम तथा प्रिंसिप में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सलाहकार सदस्य श्री फ्रेड श्वेश्टर। खेद की बात

है कि अपरिहार्य कारणों से बुरूण्डी और खंडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा इस वर्ष फिर से नहीं चुनी जा सकती। इस तरह पूरे विश्व में राश्ब्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की संख्या 174 बनी रहेगी।

चार वर्षीय योजना का समापन-बिन्दु अर्थात रिज़वान 2000 बीसवीं सदी की समाप्ति से बहुत महीने पहले ही आ जाएगा। समय के उस निर्णायक मोड़ पर बहाई विश्व जब पीछे मुड़कर देखेगा तो वह उस विलक्षण विकास और चकाचैंध भरी उपलब्धियों को देखकर दंग रह जाएगा। महान घटनाओं से भरी यह अवधि बहाउल्लाह के धर्म के इतिहास में सर्वाधिक विशिष्ट अवधि होगी, वह अवधि जिसे अब्दुल-बहा ने ‘‘प्रकाशमान शताब्दी’’ कहकर पुकारा है। उस समयकी अभिज्ञात उपलब्धियों में कार्मल पर्वत परियोजनाओं की परिसमाप्ति कम महत्वपूर्ण उपलब्धि नहीं होगी। ‘‘रचनात्मक युग’’ के उस कालखंड तक बहाई प्रशासनिक व्यवस्था जिस प्रगति को प्राप्त कर चुकी होगी, उसी प्रगति के स्मारक बनकर खडे होंगे कार्मल परियोजना के अंतर्गत उस पर्वत पर निर्मित होने वाले अनेक भवन। ईश्वर चाहेंगे तो ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए आर्क के भवनों की रचना होने और लोगों के लिए बाब की समाधि के सोपानों का मार्ग खोले जाने के अवसर पर बहाई विश्व केन्द्र में एक विशाल आयोजन सम्पन्न होगा।

प्रिय मित्रों, इस योजना में हम एक ऐसे समय में प्रवेश कर रहे हैं जब यह विश्व तेजी से एक संक्रमण की अवस्था की उथल-पुथल से गुजर रहा है। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के प्रभाव से प्रेरित दो प्रक्रियाएँ तेजी से सक्रिय हैं और उनसे एक ऐसी गतिमयता का सृजन हो रहा है जो शोगी एफेन्दी के शब्दों में ‘‘हमारी पृथ्वी के स्वरूप् को रूपन्तरित करने वाली शक्तियों को चरम बिन्दु तक पहुंचा देंगी’’। पहली प्रक्रिया है एकीकरण की प्रक्रिया और दूसरी है विध्वंसकारी प्रक्रिया। इन प्रक्रियाओं द्वारा उत्पन्न की गई ‘‘विश्वव्यापी खलबली’’ सेक्रमिक चरणों में शान्ति का अभ्युदय होगा। इस माध्यम से विश्व नागरिकता के प्रति बढ़ती हुई जागरूकता के एकताकारी प्रभाव परिलक्षित होंगे।

विडम्बना की बात है कि हाल में दुनिया में जो परिस्थितियाँ बनी हैं वे एक ओर तो बड़े ही खेदजनक हैं किन्तु दूसरी ओर वे हैं आश्वासनों से भरपूर। एक ओर तो मानवीय कार्य-व्यवहार इतने विश्रृंखल हो गए हैं कि इन्द्रियों को सुन्न कर देने वाला आतंक और भय रोजमर्रा की बात हो गए हैं किन्तु दूसरी ओर दुनिया के नेतागण अक्सर ऐसी सामूहिक सक्रियता प्रदर्शित करते रहते हैं जो किसी भी बहाई पर्यवेक्षक के लिए इस बात का परिचायक है कि विश्व की समस्याओं के लिए राष्ट्रों में साझेदारी के साथ पहले करने की प्रवृति जाग रही है। उदाहरण के लिए, विचार कीजिए कि चार वर्ष पूर्व पवित्र वर्ष के समय से लेकर कितनी बार ये नेतागण विश्वस्तरीय आयोजनों के अवसर पर इक्ट्ठे हुए हैं। पहले कभी ये आयोजन इतनी जल्दी-जल्दी नहीं हुआ करते थे। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र संघ की 50 वीं वर्षगांठ का अवसर लीजिए, जब इसमें भाग

लेने वाले राज्याध्यक्षों और शासनाध्यक्षों ने विश्व शान्ति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि ये नेतागण दुनिया के भिन्न हिस्सों में व्याप्त विविध संकटों के निराकरण के लिए बड़ी तत्परता और आत्मस्फूर्त भावना से साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। जहां एक ओर ऐसी प्रक्रियाओं का विकास हो रहा है वहीं दूसरी ओर ऊँची मानसिकता के लोगों का यह आग्रह भी बढ़ता जा रहा है कि पूरी पृथ्वी पर एक ही प्रकार के प्रशासन-तंत्र की स्थापना के कार्य को सुगम बनाने के लिए ध्यान दिया जाए। क्या इन तेजी से घटित हो रहे घटनाक्रमों में हमें ईश्वरीय दूरदृष्टि का आभास नहीं मिलता जो कि हमारे पवित्र लेखों में पूर्वघोशित महत्वपूर्ण क्षण का अग्रवाहक है ?

यद्यपि ''लघु शान्ति'' की स्थापना किसी भी बहाई योजना का कार्य पर निर्भर नहीं है और न ही यह वह अन्तिम ध्येय है जिसे मानवजाति ''स्वर्ण युग'' में प्राप्त कर लेगी तथापि यह हमारे समुदाय का दायित्व है कि उस शान्ति की दिशा में गतिशील प्रक्रियाओं को हम आध्यात्मिक प्रेरणा दें। इस समुचित समय में जरूरत है इस बात की कि हम इतना सघन प्रयास करें कि हमें बहाउल्लाह की पुष्टि प्राप्त हो और इस तरह हम एक ऐसे आध्यात्मिक वातावरण का सृजन कर सकें जिससे इन प्रक्रियाओं की गति तेज हो जाए। हमारे सामने दो प्रमुख चुनौतियां हैं: पहला है शिक्षण का ऐसा अभियान चलाना जिसमें हमारे समुदाय के असंख्य सदस्य उत्साहपूर्वक, सुनियोजित ढंग से और व्यक्तिगत स्तर पर प्रतिभागी बनें और जिसमें विस्तृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए बड़ी संख्या में मानव संसाधन का विकास सुनिश्चित हो। दूसरी चुनौती है कार्मल पर्वत पर चल रही संरचनात्मक परियोजनाओं को पूरा करना और इसके लिए भौतिक साधनों का प्रवाह उदारतापूर्वक बनाए रखने के लिए हर संभव त्याग करना होगा। अगर इन दो बातों का पूरा ध्यान दिया जाएगा तो दबी हुई शक्तियों का मार्ग प्रशस्त होगा जिससे विश्व भर में मानवजगत के कार्यव्यवहारों में एक रूपान्तरण हो जाएगा।

शांति का पथ चाहे कितना भी छोटा हो किन्तु वह है बड़ा घुमावदार। शांति की प्रक्रिया स्थापित करने वाली पूर्वकल्पित परिस्थिति चाहे जितनी भी आशाजनक हो किन्तु उसे विकास की लम्बी अवधि से गुजरकर प्रौढ़ता प्राप्त करना होगा और झेलनी होंगी परीक्षाएँ, बाधाएँ और संघर्ष। तक कहीं जाकर किसी क्षण में यह ईश्वरीय धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव से संबलित होकर ''परम महान शांति'' बनकर उदित होगी। इस दौरान सभी जगहों के लोगों को अक्सर निराशा और उलझन का सामना करना होगा -- तब तक जब तक प्रगति के इस संक्रमण को वे स्वीकार नहीं कर लेते। इस नव प्रकटीकरण का ज्ञान रखने वाले हम बहाई सौभाग्यशाली है कि हमारे पास पवित्र शब्द का आश्वासन है, दिव्य योजना का मार्गदर्शन है, वीरतापूर्ण इतिहास की प्रेरणा है। अतः न केवल इस खजाने की तरह संचित किए हुए शब्द से बल्कि वीरता और त्याग के उन कार्यों से भी हमें

साहस प्राप्त करना चाहिए जिसकी प्रखर चमक आज भी प्रभुधर्म की जन्मभूमि में प्रभासित हो रही है।

विगत लगभग सत्तर सालों से ईरान में रहने वाले हमारे उत्पीड़ित बन्धुओं ने सतत निष्ठा और साहस का परिचय दिया है जिससे प्रभुधर्म की व्यापक घोषणा हुई है और वह अनजानेपन की अवस्था से बाहर आ चुका है। अतः हमारे वर्तमान समय में ही संकट और विजय की क्षमता का जीवन्त प्रमाण मिल जाता है । ईश्वर करें कि शीघ्र ही ईरान में रहने वाले हमारे बहाई बन्धु अपने दुर्वह भार से मुक्त हो जाएँ और ऐसे भव्य तथा विलक्षण विजय के दौर में प्रवेश करें जो सिर्फ आशीर्वादित सौन्दर्य की कृपा से ही संभव है। उनका अनुभव हम सब लोगों के लिए -- चाहे हम जहाँ कहीं भी रहते हों, एक संकेत है, एक उदाहरण हैः जैसाकि प्रिय मास्टर ने कहा है कि अन्ततः हर महाद्वीप में विरोध अपना सिर उठाएगा। कालाँकि जगह-जगह इस विरोध की प्रकृति में अन्तर हो सकता है किन्तु निस्सन्देह यह विरोध बड़ा प्रबल होगा। किन्तु हम आभारी हैं बहाउल्लाह की शक्तिदायिनी कृपा के और दृढ़ता की झलक दिखलाने वाले इन मित्रों के। हमें यह पता होगा कि शत्रुओं के तीरों का सामना हमें कैसी निडरता से करना है। वस्तुतः आतिथेय के प्रभु ने अपने अनुयायियों को आश्वासन दिया है कि अन्तिम, शानदार जीत उन्हीं की होगी।

मानवता आज एक अनियंत्रित सभ्यता के उत्पात से उत्पीड़ित और आक्रान्त है। अतः हमें चाहिए कि हम अपना दिलो-दिमाग उन जिम्मेवारियों पर केन्द्रित करें जो हमारे सामने हैं, क्योंकि इसी उथल-पुथल के बीच से वे अवसर सामने आएंगे जिनका उपयोग करके "बहाउल्लाह के धर्म की मुक्तिदायिनी शक्ति का ज्ञान दूर-दूर तक फैलाने और उनके अनुयायियों की चिर विस्तारमान सेना में नित नए-नए लोगों को शामिल करने का उद्देश्य" प्राप्त किया जा सकेगा। आज जिस योजना के लिए हम प्रतिबद्ध खड़े हैं, वह एक ऐसे समय में हमारे सामने प्रस्तुत हुई है जो सम्पूर्ण पृथ्वी के जीवन में सर्वाधिक निर्णायक समय है। इसका यह अर्थ है कि हमें अपने समुदाय को पूरी दुनिया में तेजी से जो परिवर्तन सामने आ रहे हैं उनका सामना करने योग्य बनाना होगा और उसे ऐसी स्थिति में लाना होगा कि वह समय की कसौटी पर खरा उतरे, चुनौतियों का मुकाबला कर सके और इन घनघोर उथल-पुथल भरे संक्रमण के दौर में वह एक ऐसा साफ झलकने वाला ढाँचा तैयार कर सके जो विश्व के लिए उदाहरण और मार्गदर्शन का केन्द्रबिन्दु बन जाए। इस तरह यह योजना बहाई और पूरे विश्व के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है। हम लोगों में से जो लोग बहाई धर्म के इस विचार-दर्शन के प्रति सचेत हैं उन्हें विशेष कृपा प्राप्त है कि ऐसी प्रक्रियाओं को तेज करने और अन्ततः उन्हें समृद्ध करने के प्रयासों में वे पूरी तन्मयता से शामिल हो सकते हैं।

हमारी कामना है कि इस निर्णायक क्षण की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए आप सब उठ खडें हों। समय के इस छोटे से किन्तु अपार शक्ति और मानवजाति के लिए उदात्त आशाओं से भरे इस कालखंड में हर कोई अपना निशान छोड़ जाए। कहीं आप संक्रमण के इस युगब की घोर विध्वंसकारी घटनाओं से दिग्भ्रमित न हो जाएँ। अतः अपने अचूक मार्गदर्शक शोगी एफेन्दी ने इन शब्दों को सदा ध्यान में रखें: ‘‘हम क्षुद्र नाशवान लोगों का काम यह नही है कि मानवजाति के इस दीर्घ, सम्पुष्ट इतिहास की अवस्था में हम उन उपायों की थाह पा लेने की चेष्टा करें जिनके माध्यम से अपने ईश्वर को पूर्णतः भूली हुई, बहाउल्लाह की तनिक भी परवाह न करने वाली, इस रक्तरंजित मानवजाति को रक्तपात के दौर से उबारकर पुनरूत्थान की ओर ले जाया जाएगा ... हमारा तो बस इतना ही कर्तव्य है कि स्थिति चाहे जितनी भी उलझनों से भरी हो, वर्तमान परिदृश्य चाहे जितना भी अपर्याप्त हों, हमें गंभीर भाव से आत्मविष्वास के साथ, अपनी परिस्थितियों के अनुसार प्रयास करना है कि हम उन शक्तियों के क्रियान्वयन में अपना योगदान कर सकें जो बहाउल्लाह के निर्देश पर इन मानवजाति को दुख और ग्लानि की घाटी से उबारकर शक्ति और गरिमा की ऊंचाईयों पर ले जा रही हैं।’’

(हस्ताक्षरितः विश्व न्याय मंदिर)